International Research Journal of Education and Technology

Peer Reviewed Journal, **ISSN: 2581-7795**

ब्रजभाषा में रचित तुलसीदास एवं सूरदास की रामकाव्य परंपरा का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Dr. Geeta Dubey

Assistant professor

Department of Hindi

Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University, Uttarakhand

शोध सार:भारतीय संस्कृति और साहित्य में राम का स्थान अत्यंत विशिष्ट और लोकमान्य रहा है। राम एवं उनकी कथा प्रत्येक युग और परिस्थितियों के अनुरूप विविध रूपों में अवतरित होकर सतत प्रासंगिक बनी रही है। 'रमयते कण-कणे इति राम' की अवधारणा इस तथ्य को पुष्ट करती है कि राम का स्वरूप भारतीय जनमानस के कण-कण में समाहित है। वे उच्चतम मानवीय मूल्यों एवं आदर्शों के प्रतीक हैं।

भारत की विविध भाषाओं और लोकभाषाओं में श्रीराम को सामाजिक नेतृत्व के प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। समग्र साहित्य एवं इतिहास में राम एक ऐसे नायक हैं जिनका चरित्र गान उत्तर , दक्षिण, पूर्व और पश्चिम भारत के प्रत्येक क्षेत्र में भावनात्मक रूप से समाविष्ट है।

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में विष्णु के अवतारों में दो अवतार प्रमुख रूप से जनमानस के समक्ष विद्यमान हैं—राम और कृष्ण। कृष्ण जहाँ लोकरंजन के रूप में प्रतिष्ठित हैं , वहीं उनके चरित्र में चातुर्य और अद्वितीयता की झलक मिलती है। राम लोकगण के आदर्श पुरुषोत्तम हैं जिनके उदात्त चरित्र, शील, शौर्य एवं सौंदर्य के कारण उनका व्यक्तित्व अत्यंत ग्राह्य एवं आत्मसात योग्य बनता है।

राम के इस आदर्श चरित्र एवं शील का अत्यंत प्रभावशाली निरूपण गोस्वामी तुलसीदास ने अपने काव्य में किया है, जो जनमानस में स्थायी स्थान रखता है।

गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित यह दोहा—

"जो संपत्ति सिरा नहि दीन्ह दसमाथ। सो इसंपदा भीषन हसि कुच दीन्ह रघुनाथ।"

(श्रीरामचरितमानस, पृष्ठ 655)

राम की लोकप्रियता का यह उदाहरण इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि भारत की विविध भाषाओं में रामकाव्य सृजन की परंपरा व्यापक रूप से विद्यमान है। रामकथा के विस्तार और इसकी रचनात्मक विविधता पर गोस्वामी जी लिखते हैं—

"रामकथा कै महिमा जग नाहीं। अति प्रतीत होतन्ह के जग माहीं।

नाना भाषा राम अवतारा। रामायण सत कोटि अपारा।"

(श्रीरामचरितमानस, पृष्ठ 35)

इस अभिव्यक्ति से स्पष्ट होता है कि संसार में रामकथा की कोई सीमित परिधि नहीं है—यह अंतहीन है। तुलसीदास जी बताते हैं कि अनेक प्रकार से श्रीराम अवतरित हुए हैं और असंख्य रामायणों की रचना हुई है।

इस प्रकार, रामकथा की परंपरा न केवल शास्त्रीय भाषाओं अपितु लोकभाषाओं में भी व्यापक रूप से विद्यमान है। भारतीय साहित्य में आदिकाल से ही राम एवं उनकी कथा का विशेष महत्व रहा है। रामकथा का मूल स्रोत महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित *रामायण*को माना जाता है, जिसकी प्रेरणा से विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनेक रामचरितों की रचना हुई है।

समकालीन समय में भी रामकथा विषयक विविध भाषाओं में नई रचनाएं निरंतर सृजित हो रही हैं। रामकाव्य की यह समृद्ध परंपरा संस्कृत से प्रारंभ होकर पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, आधुनिक भारतीय भाषाओं एवं अनेक क्षेत्रीय तथा विदेशी भाषाओं में भी स्थापित हो चुकी है।

भाषा मानवीय भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। यह किसी क्षेत्र विशेष की संस्कृति, परंपराओं और सामाजिक मूल्यों की संवाहक होती है। अतः भारत की विविध भाषाओं और बोलियों ने अपने-अपने भाषिक स्वरूप में रामकथा को आत्मसात किया है। किंतु जो भाषा समाज के प्रत्येक वर्ग द्वारा सहज रूप से स्वीकारी जाए, वह *लोकभाषा* अथवा *जनभाषा* कहलाती है।

इसी परिप्रेक्ष्य में ब्रजभाषा के महत्व और प्रभाव को समझा जा सकता है। ब्रजभाषा लंबे समय तक साहित्यिक सृजन की सशक्त भाषा रही है, जिसमें अनेक कवियों ने रामकाव्य का रचना-कार्य संपन्न किया। जब हम रामकाव्य की भाषा पर दृष्टिपात करते हैं, तो अवधि प्रमुख रूप से सामने आती है। इसके पीछे दो कारण माने जा सकते हैं—पहला, श्रीराम का जन्मस्थल *अयोध्या*, और दूसरा, वहाँ की प्रचलित भाषा *अवधी*।

दूसरी ओर, गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित *रामचरितमानस*ने रामकथा को जन-जन तक पहुँचाने और "रमयते कण-कणे इति राम" की अवधारणा को यथार्थ धरातल पर स्थापित करने में विशेष योगदान दिया।

ब्रजभाषा का उल्लेख करते ही सर्वप्रथम कृष्ण के स्वरूप और उनके विविध लीलाओं की छवि उभरती है। इसका प्रमुख कारण कृष्ण का जन्म ब्रजमंडल में होना और वहाँ की प्रचलित बोली ब्रजभाषा होना है। साथ ही अधिकांश कृष्णकाव्य का सृजन ब्रजभाषा में ही हुआ है।

इन तथ्यों के आधार पर विचार करने पर यह प्रश्न उठता है कि ब्रजभाषा में जो रामकाव्य या रामचरित रचा गया, क्या वह स्वरूप में कृष्णकाव्य के समान है ? जैसे कृष्ण की बाललीला , प्रेमलीला, रासलीला साहित्य में वर्णित हैं, क्या श्रीराम के उदात्त चरित्र में ऐसे तत्व स्थापन योग्य हैं?

ब्रजभाषा में रचित काव्य परंपरा में कृष्ण नायक रूप में प्रमुखता से उपस्थित हैं। किंतु जब हम ब्रजभाषा में श्रीराम के चरित्र का निरूपण करते हैं , तब उनके उदात्त गुण , करुणा, संवेदनशीलता और लोकमंगलकारी भावों की अभिव्यक्ति विशिष्ट रूप से सामने आती है। इन पहलुओं का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है, और यही शोधपत्र का प्रमुख उद्देश्य है।

ब्रजभाषा में रामकाव्य सृजन की दीर्घ परंपरा दृष्टिगोचर होती है, जिसमें निम्न प्रमुख रचनाएँ सम्मिलित हैं:

- *रामानंद*कृत *रामाचमन पद्धति*
- *वैष्णव महात्मा भास्कर*रचित *राम रचना स्त्रोत*
- *ईश्वरदास*की *भरत मिलाप*
- *विष्णुदास*रचित *रामायण कथा*
- *सूरदास*कृत *सूरसागर*का *नवम स्कंध*
- *गोस्वामी तुलसीदास*कृत *गीतावली, कवितावली, विनय पत्रिका, दोहावली*
- *प्राणचंद चौहान*की *रामायण महानायक*
- *गुरु गोविंद सिंह*कृत *रामावतार*तथा *गोविंद रामायण*
- *केशवदास*द्वारा रचित *रामचंद्रिका*

ये रचनाएँ ब्रजभाषा में राम के विविध रूपों का सृजनात्मक एवं भावनात्मक निरूपण करती हैं और भारतीय भाषिक-साहित्यिक परंपरा में उनकी विशिष्टता को सुदृढ़ करती हैं।

प्रस्तुत शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य ब्रजभाषा में रचित रामकाव्य की दीर्घकालीन परंपरा का समग्र अनुशीलन एवं विश्लेषण करना है। इसके केन्द्र में विशेषतः गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित *गीतावली* एवं *कवितावली* तथा सूरदास कृत *सूरसागर* के नवम स्कंध में इन सम्पदाओं का लोकगायन और भावात्मक प्रसार है। साथ ही , इन कवियों ने रामजी के उदात्त गुण , करुणा और लोकमंगलकारिता को ब्रजभाषा के माध्यम से किस प्रकार चित्रित किया है, इसका अवलोकन किया जाएगा।

शोध के प्रमुख प्रश्न

1. ब्रजभाषा में रामकाव्य की परंपरा का स्वरूप एवं विकासगत आयाम क्या हैं?
2. जब ब्रजभाषा का लोकनायक रूप सामान्यतः कृष्ण को प्राप्त रहा , तब रामके चरित्र-चित्रण में क्या भाषिक–सांस्कृतिक अंतर आया?
3. कृष्ण की लोकरंजक लीलाओं की जगह राम के लोकमंगलकारी चरित्र को ब्रजभाषा में कैसे स्थान दिया गया?
4. तुलसीदास एवं सूरदास ने ब्रजभाषा में श्रीराम के उदात्त चरित्र , शील और संवेदना की अभिव्यक्ति किस-किस रचनात्मक तकनीक से की?
5. सामाजिक एवं जनमानस के दृष्टिकोण से ब्रजभाषा में रामकाव्य की अद्‌भुत स्वीकृति एवं भावात्मक प्रेरणा के कारण कौन-से कारक रहे?
6. रामजी से जुड़ी मुख्य महत्त्वपूर्ण प्रसंगावलियों (रामजन्म, बाललीला, सीता–राम संवाद, भरत–राम संवाद, लक्ष्मण की वीरता , सीता–हनुमान संवाद, करुणादृष्टि आदि) का ब्रजभाषा में प्रस्तुतीकरण किस प्रकार हुआ?

- रामकाव्य की परंपरा
- ब्रजभाषा का स्वरूप
- उदात्त चरित्र एवं संवेदना
- लोकमंगल
- गीतावली, कवितावली, सूरसागर
- तुलसीदास और सूरदास
- लोकगायन एवं लोकभाषा

शोध विधि

प्रस्तुत शोधपत्र में आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोधपद्धति का प्रयोग किया गया है। मुख्य ग्रन्थों—*गीतावली, कवितावली, सूरसागर*आदि—के पाठ्य-आधारित तुलनात्मक एवं थीमैटिक विश्लेषण के माध्यम से निम्न दृष्टिकोण अपनाए जाएंगे:

- ग्रन्थ-गत संरचना एवं भाषिक लय का अध्ययन
- मुख्य प्रसंगों का साहित्यिक–भावनात्मक विवेचन
- तुलसीदास एवं सूरदास के काव्य-शैलीगत भेदों का अवलोकन
- ब्रजभाषा की लोकज्ञात रचनाशीलता एवं सामाजिक प्रभाव का अन्वेषण

इस प्रकार, ब्रजभाषा में रचित रामचरित परंपरा के विविध आयामों का सम्यक चिंतन-संक्षेप प्रस्तुत शोध का मूल साधन होगा।

विषय प्रवेश

भारतीय साहित्य में राम-कथा निरंतर नवनिर्माण और लोकगायन की सूक्ष्म परंपरा बनी रही है। आदिकाल से महर्षि वाल्मीकि के विश्व-प्रसिद्ध रामायण से लेकर गोस्वामी तुलसीदास के रामचरितमानस तक , रामकथा ने जनचेतना में आदर्श, समरसता और लोकमंगल का संदेश भरा है।

भाषाई रूपांतर की दृष्टि से , ब्रजभाषा ने कृष्ण-काव्य के साथ-साथ राम-काव्य के उज्ज्वल मंच भी तैयार किए हैं। कृष्ण की बाललीला , रासलीला जहां लोकरंजन का स्रोत हैं , वहीं ब्रजभाषा में तुलसीदास एवं सूरदास ने राम के उदात्त चरित्र, करुणा और लोकहितकारी कर्तव्यों को सुबोध छंदों में जीवंत किया:

- तुलसीदास ने अवधी के साथ ब्रजभाषा का प्रयोग कर “गीतावली”–“कवितावली” में रामचरित को जन-जन तक पहुँचाया।
- सूरदास ने “सूरसागर” के नवम स्कंध में लोकगायन हेतु लोकगत रामप्रसंगों का संकलन किया।

तुलसीदास की द्विभाषीय दक्षता का प्रमाण इसी से मिलता है कि वे स्वयं कहते हैं: “हिन्दी कहित के प्रेमी मात्र जानं कि उनका ब्रजभाषा और अवधी दोनों पर समान अधिकार था।” (रामचरितमानस, 88)

ब्रजभाषा की इस मधुरता ने रामचरित के उदात्त भाव को जन-मानस तक सहजता से समाहित किया। अतः प्रस्तुत शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य ब्रजभाषा में रचित रामकाव्य की इस दीर्घ परंपरा का समग्र अनुशीलन

करना है, जिसमें तुलसीदास एवं सूरदास की द्विभाषीय काव्यरचनाएँ , स्थानीय लय-रूपक, भाव-प्रतिभाव और सामाजिक प्रभाव के विविध आयामों का विश्लेषण शामिल होगा।

गोस्वामी तुलसीदास का भाषिक औदात्य केवल तत्कालीन युग तक सीमित नहीं रहा , बल्कि वह आधुनिक संदर्भों में भी पूर्णतः प्रासंगिक है। उनके द्वारा रचित रामचरितमानस ने साहित्यिक उत्कृष्टता , भक्ति भाव और लोकमंगल के आदर्शों को इतने प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया कि वह आज भी जनमानस में जीवित है।

सूरदास, यद्यपि मूलतः कृष्णभक्त कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं और उनका अधिकांश काव्य श्रीकृष्ण की लीलाओं का गान है, फिर भी उनके "सूरसागर" के नवम स्कंध में रामकथा को अत्यंत मार्मिक, सौंदर्यपूर्ण और समर्पित भाव से प्रस्तुत किया गया है। यह कथ्य इस बात का साक्ष्य है कि सूरदास के हृदय में राम के प्रति कोई द्वैध भाव या प्राथमिकता का भेद नहीं था। उन्होंने जिस तरह राम के जीवन प्रसंगों को गीतात्मक छंदों में संजोया है, वह पूर्ण समर्पण और भक्ति से ओतप्रोत है।

नवम स्कंध में सूरदास ने रामचरित्र का वर्णन विभिन्न प्रसंगों के आधार पर किया है—राजा पुरुरवा , च्यवन ऋषि, हलधर, राजा अंबरीष और सौभर ऋषि की कथाओं के पश्चात मृत्युलोक में गंगाजी के आगमन और परशुराम-अवतार की भूमिका भी प्रस्तुत की गई है। उसके बाद रामावतार के कारणों और श्रीराम के जन्म की घटनाओं को अत्यंत भावपूर्ण भाषा में गीतात्मक छंदों द्वारा वर्णित किया गया है। इस स्कंध में कुल 157 पदों में संपूर्ण रामकथा का संक्षिप्त किंतु सजीव चित्रण प्राप्त होता है।

सूरदास द्वारा रचित पद में श्रीराम के जन्मोत्सव का भावपूर्ण चित्रण मिलता है:

"रघुकुल प्रगटे हैं रघुबीर।

देश–देश ते लीकौ आयौ, रतन–कनक–महन हीर।।

अयोध्या बाजहै आजु बधाई।

गर्भ मुच्यौ कौसल्या माता, रामचंद्र निधि आई।।

चारि पुत्र दशरथ के उपजे, भयो लोक ठकुराई।

सदा–सर्वदा राज राम कौ, सूरदास दैत पाई॥"

इस पद में सूरदास रघुकुल में राम के जन्म को दिव्य निधि के रूप में वर्णित करते हैं , और अयोध्या में मंगलगान की गूंज को अत्यंत हर्षपूर्वक प्रस्तुत करते हैं। देश-देश के राजा-महाराजा राजदशरथ के पास बहुमूल्य उपहार लेकर आए हैं। यह लोक में व्याप्त राम की लोकप्रियता और प्रतिष्ठा का प्रमाण है।

सूरदास ने स्पष्ट रूप से यह अभिव्यक्त किया है कि राम का राजत्व सदा-सर्वदा स्थापित है और स्वयं कवि भी उसी राज्य की कृपा में पथ प्राप्त करते हैं। यह उनकी राम के प्रति समर्पित भावना का उद्घोष है , जो उनकी कृष्णभक्ति के समान ही गहन और उदात्त है।

इस प्रकार, सूरदास का राम के प्रति समर्पण, उनका भावपूर्ण चित्रण, और नवम स्कंध में प्रस्तुत रामचरित्र न केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि यह यह सिद्ध करता है कि भक्त कवि सूरदास ने धर्म, जब गोस्वामी तुलसीदास ब्रजभाषा में श्रीराम के बालस्वरूप का चित्रण करते हैं , तो उनके भाव में सूरदास के वात्सल्य और माधुर्य के गहन स्पर्श की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। *कवितावली*में तुलसीदास ने राम की बाललीला का अत्यंत मनोहर एवं सजीव वर्णन किया है:

“कबहुँ सहसि सुमागत आरर करै, कबहुँ प्रहत बंभ बनिहार डरै।

कबहुँ करताल बजाइ कै नाचत, मातु सबै मन मोद भरै।।

कबहुँ रहस आई कहैं हठ कै, पुन्हु लेत सोई जेहि लाह गअरै।

अवधीश के बालक चार रसदाता, तुलसी-मन-मंदिर में बहरै।।”*(कवितावली, गोस्वामी तुलसीदास, पृष्ठ 2)*

इस छंद में राम और उनके तीनों भ्राताओं की बाल क्रीड़ाओं को अत्यंत कोमलता और स्वाभाविकता के साथ प्रस्तुत किया गया है—वे चंद्रमा मांगने की हठ करते हैं , अपनी ही परछाईं से भयभीत हो जाते हैं , तालियां बजाकर उत्साह से नाचते हैं। इन क्रियाओं से माँ कौशल्या का हृदय आनंदित हो उठता है।

यह भावोद्गार सीधे तौर पर सूरदास की *कृष्ण-बाललीला*की स्मृति को जागृत करता है , जहाँ कृष्ण की चपलता, लीलाभाव और माँ यशोदा के साथ उनका भावसंबंध वात्सल्य की पराकाष्ठा तक पहुँचता है।

तुलसीदास ने *गीतावली*में भी राम के जन्मोत्सव और बालचरित्र का चित्रण अत्यंत हर्ष और उल्लास के साथ किया है:

"आजु सुदिन सुभ घरी सुहाई, रूप–शील–गुन–धाम राम नृप–भवन प्रगटे भए आई।उमग चल्यो आनंद लोक हितहुँ, देत सबहिं मंदिर रतए।तुलसीदास पुन्हु भरेइ देह ख्यति , राम कृपा चित्त हिअ चितए॥ "*(गीतावली, पृष्ठ 17, 24)***

यहाँ श्रीराम के जन्म के अवसर पर समस्त लोक आनंदित है , नृप-दरबार में उत्सव की ध्वनि है और समग्र ब्रह्मांड में हर्ष व्याप्त है। यह शैली भावाभिव्यक्ति की दृष्टि से अत्यंत मधुर, ललित और ममत्वपूर्ण है।

*गीतावली*में तुलसीदास की अभिव्यक्ति का प्रमुख लक्ष्य भावमाधुर्य , ललितता एवं धार्मिक ममत्व रहा है। बालकांड में राम की बाल लीला , निष्क्रमण प्रसंग, चित्रकूट वास आदि को जिस सरस शैली में वर्णित किया गया है, वह साक्ष्य है कि ब्रजभाषा रामकथा के भावाभिव्यक्ति के लिए एक अनन्य और उपयुक्त माध्यम रही है।

विशेष रूप से ममत्वयुक्त प्रसंगों—राम निष्क्रमण , कौशल्या की विरह-वेदना, लक्ष्मण की मूर्छा, अयोध्या में भरत–हनुमान मिलन आदि—प्रभावशाली गहराई के साथ प्रस्तुत किए गए हैं , जो लोकमंगल तथा उदात्त भावों के सशक्त उदाहरण बनते हैं।

भक्ति और लोकमंगल के संतुलित भावों को पूर्णतया आत्मसात किया।

कवितावलीमें गोस्वामी तुलसीदास सामाजिक यथार्थ को अत्यंत सजीव और यथार्थपरक शैली में प्रस्तुत करते हैं। समाज की विषम परिस्थितियाँ , आर्थिक असमानता, और जन-जीवन की त्रासदी का चित्रण इस पद में मिलता है:

"खेती न किसान को , भिखारी को न भीख।बहल बहनक को बहनज , न चाकर को चाकरी।।जीविका हीन लोग सुद्यमान सोच बस, कहैं एक-एकन सों – 'कहाँ जाई , का करी?' वेद पुरान कही, लोकहन बलोहकयत, सांकरे सबै पै, राम! राजीरे कृपा करी।।दारिद्र सानंद बाई दुनी, दीनबंधु।दुरित दहन देख तुलसी हहाकरी।"

इसमें तत्कालीन समाज की दयनीय स्थिति को तुलसीदास ने लोकदृष्टि से देखा और व्यक्त किया है। यह ब्रजभाषा में रचित पद मध्यकालीन सामाजिक यथार्थ का दस्तावेज बन जाता है—जहाँ किसान , भिक्षु, सेवक और सामान्य जन सभी संघर्षरत हैं, और आशा केवल प्रभु राम की कृपा पर टिकी है।

इसी सामाजिक एवं भावप्रवण परंपरा को सूरदास भी अपनी कृति *सूररामचरितावली*में विस्तार देते हैं। सूरदास, जिन्हें कृष्ण भक्ति के कवि के रूप में जाना जाता है , ने नवम स्कंध में राम की संवेदनशीलता, पीड़ा और मानवतावादी स्वरूप को अत्यंत मार्मिकता से उकेरा है:

“रघुपति कहह प्रिय नाम पुकारत।

हाथ धनुष लीन्हे, कहि भाथा, चहकत भए दिस-दिस निहारत।।

निरखत सून भवन जड़ है रहे किन लोचन धर, बपुनु संभारत।

हा सीता! सीता! कहह सियपति उमग नयन जल भर-भरि ढारत।।”

यह चित्रण राम को केवल एक ईश्वरीय अवतार नहीं, बल्कि संवेदनशील मानव के रूप में प्रस्तुत करता है—जो सीता के वियोग में अश्रु बहा रहे हैं , और सामान्य जन की तरह विकल होकर उन्हें खोज रहे हैं। यह चित्रण सामान्य मानव अनुभव से पाठक को जोड़ता है और साहित्य में *साधारणीकरण*की सुंदर अभिव्यक्ति बनता है।

सूरदास *कैकेयी प्रसंग*को भी इसी भावप्रवण शैली में प्रस्तुत करते हैं:

“महाराज दशरथ मन धारी, अवध पुरी को राज राम दै , लीजै व्रत निचारी।।यह सुन बोली नारी कैकेयी, अपनौ चिन संभारौ।चौदह वर्ष रहें वन राघव , छत्र भरत सिर धारौ।।यह सुन नृपति भयो अति व्याकुल , कहत कछु नहि आई।सूर रहे समझाई बहुत पै कैकेयी हठ नहीं जाई।”

यह पद स्पष्ट करता है कि राजनैतिक परिस्थिति के बीच कैकेयी के अटल निर्णय ने समाज और परिवार में संघर्ष उत्पन्न किया। सूरदास ने कैकेयी के मनोभावों को भी गहराई से विश्लेषित किया और राजा दशरथ की मानसिक पीड़ा को ज्वलंत रूप से व्यक्त किया।

राम–सीता संवाद, विशेषकर वनगमन के समय का प्रसंग , सूरदास की लेखनी में अत्यंत मार्मिकता लिए उपस्थित होता है:

“तुम जानकी! जनकपुर जाहु।कहाँ आन हम संग भरमो , गहबर बन दुख–संधु अथाहु।।ऐसौ सहज नर–धौर रघुराई।तुम सौ प्रभुतज मो–सी दासी, अनंत निकहिं समाई।”

यहाँ राम के भाव अत्यंत मानवीय हैं—वे सीता को वनगमन से रोकते नहीं , बल्कि करुणा, प्रेम और व्याकुलता के भाव में संवाद करते हैं। यह साहित्यिक दृश्य सूरदास के राम भक्ति के समर्पित स्वरूप को उजागर करता है।

ब्रजभाषा में तुलसीदास और सूरदास की रचनाएँ केवल भक्ति साहित्य नहीं हैं , बल्कि सामाजिक यथार्थ, मानवीय संवेदना, राजनीतिक द्वंद्व और लोकभावना का समवेत चित्रण हैं। इन काव्यपंक्तियों में न केवल धर्म बल्कि जन–जीवन की विविध छवियाँ समाहित हैं, जो उन्हें कालजयी बनाती हैं।

सूरदास द्वारा प्रस्तुत संवाद में राम और सीता का भावनात्मक सम्वाद अत्यंत संवेदनशीलता एवं समर्पण भाव से भरा हुआ है। राम , जनकपुर लौटने का सुझाव सीता को इस कारण देते हैं कि वन के मार्ग में घोर कठिनाइयाँ और दुःख की अथाह लहरें हैं , जो सीता जैसी कोमल प्रकृति की देवी के लिए पीड़ादायक हो सकती हैं। यह संवाद राम के वात्सल्य, करुणा और संरक्षण भाव का परिचायक है।

इस पर सीता का उत्तर उनके पूर्ण समर्पण, पतिव्रता धर्म और आदर्श प्रेम का प्रतीक बन जाता है। वे कहती हैं कि रघुनाथ! ऐसा विचार कृपया मन में न रखें ; आपके समान स्वामी को छोड़कर मैं और किसी आश्रय को स्वीकार नहीं कर सकती। यह कथन नारी की स्वाभाविक आत्म-निष्ठा एवं पति के प्रति श्रद्धा का आदर्श रूप प्रस्तुत करता है। यह भाव लोक-जीवन में मर्यादा , समर्पण और प्रेम की उच्चतम संस्कृति की स्थापना करता है।

तुलसीदास, जब ब्रजभाषा में रामचरित का चित्रण करते हैं , तब वह भक्ति के साथ-साथ ममत्व और माधुर्य की भाव-धारा को और अधिक सघनता प्रदान करते हैं। विशेषतः वनगमन प्रसंग में सीता , राम और लक्ष्मण की वन यात्रा का वर्णन जनमानस को अत्यंत भावुक कर देता है। सीता के सुकुमार रूप के कारण उनकी थकावट का चित्रण इस प्रसंग में अत्यंत कोमलता से किया गया है:

“पुरतें हनक सी रघुबीरि धूधरि धीर दे मग में डग दै ।झलकी भरि भाल कनी जल की , पुंसूखि गइ मधुरा धरि कै ।।फेरि बुझत हैं चलनो अब के हतक , पन मुकुटी करि हौ हतकै ।हतय की लखि आतुरता पर्य की अंखियाँ अतिचारू चलीं जल चिटै॥” *(कवितावली, तुलसीदास, पृष्ठ 17)*

इस दृश्य में राम सीता को मार्ग में कठिनाई के कारण सहारा देते हैं। उनके मुखमंडल पर पसीने की बूंदें झलक रही हैं, उनके नेत्रों में थकावट की स्पष्ट झलक है , फिर भी वे संयमपूर्वक यात्रा में संलग्न रहती हैं। यह

चित्रण केवल एक पौराणिक दृश्य नहीं बल्कि लोकमानस की संवेदना में स्थायी रूप से अंकित आदर्श युगल का चित्र है।

सारतः, इन दोनों कवियों—सूरदास और तुलसीदास—ने राम और सीता की भाव-यात्रा को ब्रजभाषा में इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि वह केवल धार्मिक चरित्र नहीं, बल्कि संवेदनात्मक प्रेरणा के रूप में समाज को आदर्श जीवन-मूल्य प्रदान करते हैं।

प्रभु श्रीराम, अपनी पत्नी जानकी को खोजते हुए वन प्रांतों, वृक्षों और पशु-पक्षियों से बारंबार व्याकुल होकर पूछते हैं—"हे सखा! क्या तुमने इस मार्ग से जाती हुई मेरी पत्नी को देखा है ?" यह दृश्य राम के मानवीय पक्ष, करुणा और भाव-संवेदना का मर्मस्पर्शी उदाहरण है। सूरदास ने अपने रामकाव्य में इसी प्रकार के प्रसंगों को न केवल भावनात्मक गहराई से चित्रित किया है , अपितु उन्हें समाज-सापेक्ष एवं लोक-संपृक्त बनाकर प्रस्तुत किया है।

सूररामचरितावलीकी एक विशेषता यह भी है कि इसमें *रामचरितमानस*की तरह सात कांडों की संरचना है, जिनमें प्रत्येक प्रसंग को सूर ने अत्यंत ममत्वपूर्ण शैली में अभिव्यक्त किया है। सूर के राम केवल शक्तिशाली नहीं हैं; वे शरणागत-वत्सल, धैर्यवान, गंभीर, कोमल और संवेदनशील व्यक्तित्व के रूप में सामने आते हैं। उन्होंने जिन ममत्वपूर्ण स्थलों को पहचाना, उन्हें भाव-प्रवणता के साथ रचकर लोक-मन को बाँध लिया।

सूरदास के राम और कृष्ण में एक आत्मीयता की अनुभूति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उनकी रचनाओं को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने राम और कृष्ण को एक समान संवेदना के स्रोत के रूप में देखा और अपनाया। जैसे—अशोकवाटिका में हनुमान का सीता से संवाद:

“निचर! कौन देस ते आयौ ? कहाँ रे राम, कहाँ रे लछमन, क्यौं करि मुरापायौ? हौं हनुमंत, राम कौ सेवक, तुम्ह सुदि लैन पठायौ।रावन मारि , तुम्हें लै जातौं, राम आज्ञान हौं पायौ।तुम्ह जान डरौ मेरी माता , राम जोरि दल ल्यायौ।”

यह संवाद न केवल भावप्रवण है , बल्कि लोकवाणी और कवित्व की दृष्टि से अत्यंत प्रभावशाली है। सीता प्रश्न करती हैं—वह कौन हैं , कहाँ से आए हैं—और हनुमान सहज विनम्रता और उत्साह से उत्तर देते हैं , जिससे पाठक को संवाद की गरिमा और आत्मीयता का अनुभव होता है।

इसी प्रकार तुलसीदास ने *गीतावली*एवं*कवितावली*में राम को एक संवेदनशील , करुणामय एवं जन-हृदय में रमे हुए आदर्श पुरुष के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके पदों में राम का दुःख , प्रेम और लोकहित भावना सहजता से सामने आती है—जैसे लक्ष्मण के घायल होने पर राम की व्यथा:

“राम लखन उर लाय लये हैं।भरे नीर राजीव नयन, सब अंग पर तापत हैं।मेरो सब पुरुषार्थ थाको, विपत्त बनावन बंधु-बाहु, बनु करौ भरोसो काको।”

यहाँ राम एक सामान्य मानव की तरह अपने भाई के प्रति व्याकुल हैं। यही भाव राम-भरत के प्रेम में भी देखा जा सकता है। ये प्रसंग समाज में संबंधों की पवित्रता और सहानुभूति की स्थापना करते हैं।

तुलसी का रामकाव्य लोकमंगल की भावना से युक्त है। उन्होंने राम को “रिक” , “दीनदयाल”, “शरणागतपाल”, “गरीब निवाज”, “अनाथों के नाथ” जैसे विशेषणों के माध्यम से लोकजीवन का भावात्मक आदर्श बनाया। उनके अनुसार:

“गये राम सरन सब कौ भलो।गनी-गरीब , बड़ो-छोटो, बुध-मूढ़, हीनबल-अहितबलो।पंगु-अंध, निरगुनी-निसंबल, जो न लहि जाचे जलो।सो निबघो नीके, जो जनहूं जग राम राजमारग चलो।”

इन रचनाओं से यह प्रतिपादित होता है कि राम सबके हैं—हर दृष्टिकोण से अलग-अलग रूपों में। युगानुकूल व्याख्याओं ने उनके चरित्र में नवीनता प्रदान की है , किंतु उनका आदर्श स्वरूप निर्विवाद रूप से समस्त भारतीय चेतना में रमा हुआ है।

फादर कामिल बुल्के द्वारा उद्धृत एक प्रसंग और उल्लेखनीय है—रावण , जब कुंभकरण से कहता है कि सीता उसका वरण नहीं कर रही , तब कुंभकरण राम का रूप धारण करने की सलाह देता है। परंतु रावण उत्तर देता है कि "राम का स्वरूप धारण करते ही मेरी पापबुद्धि नष्ट हो जाती है"—यह दर्शाता है कि रामत्व का प्रभाव इतना उच्च है कि वह अधर्म को भी नष्ट कर सकता है।

ब्रजभाषा में रचित रामकाव्य, अपने भावप्रवणता, लोकप्रज्ञता और धार्मिकता के संतुलन से जन-जन के हृदय में रच-बस गया है। तुलसी का काव्य शुद्ध भक्ति , गहरी संवेदना और लोकमंगल का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करता है। यह केवल धार्मिक आख्यान नहीं , बल्कि भारतीय संस्कृति और दर्शन का सजीव प्रतीक बन चुका है।

रामकाव्य का मूल प्रतिपाद्य मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का आदर्श चरित्र है , जो निरंतर ब्रह्म के सगुण स्वरूप को लीलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करते हुए भक्तहृदय को भावमग्न करता है। यह चरित्र सामाजिक चेतना में उदात्त मूल्यों की प्रतिष्ठा करते हुए सामान्य जनमानस को भी गहन प्रेरणा प्रदान करता है। रामकाव्य परंपरा मूलतः भक्ति और भारतीय संस्कृति की समन्वित भावभूमि पर उभरी है , जिसमें धर्म, काव्य, लोक-चेतना और सामाजिक संरचना का सुंदर समवेत रूप निर्मित होता है।

संस्कृतनिष्ठ भाषिक दृष्टिकोण से ब्रजभाषा में रचित रामकाव्य अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसकी सरसता , ललित्य एवं माधुर्य के साथ-साथ गेयता और संगीतात्मकता इसे विशिष्ट बनाती है। गोस्वामी तुलसीदास द्वारा ब्रजभाषा में रचित *गीतावली*एवं *कवितावली*में रामचरित का जो चित्रण मिलता है , उसमें भावनात्मक कोमलता और साहित्यिक सौंदर्य की अभूतपूर्व छवि प्रस्तुत होती है।

इन ग्रंथों में सात कांडों की रचना हुई है, किंतु शैलीगत दृष्टि से ये *रामचरितमानस*से कुछ भिन्न प्रतीत होते हैं। जहाँ *मानस*में शास्त्रीय गाम्भीर्य और दर्शनिक गहराई है , वहीं ब्रजभाषा में रचित *कवितावली*और *गीतावली*में ममत्व, ललित्य और लोकगायन की सहज प्रवृत्ति दिखाई देती है।

गोस्वामी तुलसीदास को तत्कालीन समाज की संवेदना , अनुभूति और उससे जुड़े ममत्वपूर्ण प्रसंगों की गहन समझ थी, जो उनके ब्रजभाषा काव्य में परिलक्षित होती है। तुलसी और सूर दोनों ही कवियों ने लोकभाषा को माध्यम बनाकर सनातन सांस्कृतिक मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने का सशक्त कार्य किया।

तुलसीदास स्वयं अपने विषय में विनम्रता प्रकट करते हुए लिखते हैं— **"कहब त एक एक न मोरे। सत्य कहौं लिखि कागद कोरे।"***(रामचरितमानस, पृ. 12)*यह उद्घोष उनकी आत्मविनीत काव्यदृष्टि को दर्शाता है—एक ऐसा भाव जो केवल लोकमंगल की भावना से ओतप्रोत काव्यकार ही व्यक्त कर सकता है।

सूरदास का रामकाव्य भी विशिष्ट है। *सूरसागर*के नवम स्कंध में उन्होंने रामचरित से संबंधित अनेक प्रसंगों जैसे—राम जन्म, शरक्रीड़ा, विश्वामित्र यज्ञरक्षा, धनुषभंग, सीता स्वयंबर, राम–निष्क्रमण, कैकेयी वचन, लक्ष्मण–केवल संवाद, भरत–चित्रकूट गमन, सीता हरण, राम–विलाप, हनुमान–राम संवाद, सीता–हनुमान संवाद, अग्नि परीक्षा, राज–समाज चित्रण—आदि को अत्यंत सरस , ममत्वपूर्ण और काव्यात्मक शैली में चित्रित किया है।

इन पदों को पढ़कर यह स्पष्ट होता है कि सूरदास न केवल कृष्णभक्त थे , बल्कि उन्होंने राम के प्रति भी पूर्ण श्रद्धा और समर्पण भाव रखा, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण उनका रामकाव्य है।

रामकथा केवल भारत तक सीमित नहीं रही ; यह विश्व के अनेक भागों में भी लोकप्रिय एवं लोकप्रिया रही है। ब्रजभाषा में रचित रामकाव्य की परंपरा इसलिए अत्यंत विस्तृत है, और तुलसी एवं सूर की रचनाएँ इस परंपरा की अनुपमेय धरोहर हैं।

इन काव्यों में लोकमंगल की भावना , लोकरंजक शैली और समरसता की दृष्टि से राम को जनमानस से आत्मसात कराया गया है। तथ्य और संरचना दोनों दृष्टियों से ब्रजभाषा में रामकाव्य की महत्ता और प्रासंगिकता सर्वदा अक्षुण्ण बनी रहेगी।

संदर्भ सूची

1. तुलसीदास, गोस्वामी (संवत् 2049). *श्रीरामचरितमानस.* गोरखपुर: गीता प्रेस।
2. सिंह, डॉ प्रभाकर (2019, प्रथम संस्करण). *भारतीय भाषाओं में रामकथा.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
3. शुक्ल, रामचंद्र. *हिंदी साहित्य का इतिहास.* वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा।
4. सिंह, सुदर्शन (अनुवादक) (संवत् 2012, प्रथम संस्करण). *सूरदास कृत सूररामचरित्रावली.* गोरखपुर: गीता प्रेस।
5. तुलसीदास, गोस्वामी (संवत् 2061). *कवितावली.* गोरखपुर: गीता प्रेस।
6. तुलसीदास, गोस्वामी (संवत् 2077). *गीतावली.* गोरखपुर: गीता प्रेस।
7. सूरदास. *सूररामचरितावली.* गोरखपुर: गीता प्रेस।
8. बुल्के, फादर डॉ. कामिल (1977). *रामकथा और तुलसीदास.* प्रयागराज: हिंदुस्तानी अकादमी।